हिन्दी साहित्य में भारतेन्दुजी का योगदान

फाल्गुनिबहन नटवरलाल पटेल
सरकारी आदर्श निवासी शाला (कन्या), खेडब्रह्मा

१. प्रास्ताविक

हिन्दी साहित्य का विकास कार्य भारतेंदु युग में शुरु हुआ ऐसा माना जाता है । क्योंकी रीतिकाल की विकृत सामन्ती संस्कृति की पोषक वृत्तियों को छोड़कर स्वस्थ परंपरा की भूमि अपनाई और नवीनता के बीज ! इस युग में बोये गए । जीसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते है । और उस समय का हिन्दी साहित्य का नवजागरण काल माना जाता है । भारतेन्दु ने अपना साहेतिय में उस समय के देश की सामाजिक, राजकीय, धार्मिक परिस्थितियों के बारें में जानकारी दी । और भारतेन्दु हिंदी गद्य के प्रथम लेखक भी कहे जाते है । हिंदी गद्य के विकास का पहला युग भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है । इस युग में गद्य साहित्य का सर्वोत्तमुखी विकास हुआ । इस युग में नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना, पत्र-पत्रिकाएँ, अनुवाद आदि सभी गद्य विद्याओं पर साहित्य की रचना की गयी है । भारतेन्दु जी ने इतिहास, भूगोल, विज्ञान, पुराण, आदि विषयों पर स्वयं लिखा और अन्य लेखकों को लिखने के लिए प्रेरित किया । पत्र पत्रिकाओं स्कूल, क्लबों, समाज सेवी संस्थाओं द्वारा हिन्दी गद्य एवं भाषा का प्रचार प्रसार किया गया । हिन्दी में नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु से माना जाता है ।

२. भारतेन्दुजी का परिचय

भारतेन्दुजी का मूल नाम 'हरिश्चन्द्र' था, 'भारतेन्दु' उनकी उपाधी थी । उनका जन्म 9 सितम्बर 1850 वाराणसी, उत्तरप्रदेश में हुआ था । उनके पिता गोपालचंद्र एक अच्छे कवि छे और गिरधरदास उपना से कविता लिखा करते थे । बचपन माता-पिता के बिना गुजरा । वो बहोत संवेदनशील व्यक्ति थे और उस वजह से सोचने समझने का विकास के कारण कृत्तिओं का निर्माण होना शुरु हुआ । उनका काव्य प्रतिभा उनके पिता से विरासत के रुप में मिली थी । उन्होंने पाँच वर्ष की अवस्था में ही निम्नलिखित दोहा बनाकर अपने पिता को सुनाया और सुकाय होने का आशीर्वाद प्राप्त किया । उनकी प्रमुख कृत्तियों में 'वेद की हिंसा हिंसा न भवति', 'भारत दुर्दशा' (1880), 'अंधेरी नगरी' (1881), 'सती प्रताप' (1883), निबंध में 'भारतेन्द्रु ग्रंथावली', 'नाटक', कालचक्र, जातीय संगीत, आदि । काव्यकृतियों में 'प्रेममलिका' (1871) 'प्रेम तरंग' (1877) 'होली' (1879) 'कृष्ण चरित्र' (1883) दानलीला आदि । कहानी में 'अदभूत अपूर्व स्वप्न', और आत्म कथा में 'एक कहानी' – कुछ आपबीती, कुछ जगबीती आदि का निर्माण किया ।

३. साहित्य निर्माण

उनकी कई सारी रचनाओं को पढ़कर या देखकर, प्रेरणा से अनेक लेखकने साहिच्य रचना में प्रवृत्त होना शुरु किया था । जीसमें श्रीनिवास लाला, प्रताप नारायण मिश्रा, राधाकृष्ण दास, किशोरी लाल गोस्वामी आदि प्रमुख है । इसके अलावा इस काल में हरिश्चंद्र मेगेजीन । ब्राह्मण हिंदी प्रताप, आनंद कादम्बिनी आदि पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई । भारतेन्दु युग में साहित्य निर्माण वेग से हुआ । इस युग के रचनाकारों ने जनमानस और प्रवर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखकर, अनुकूल भाषा में साहित्य निर्माण कीया । वहीं दूसरी और उसमें व्याकरण की अशुध्धियों, पद विन्यास, वाक्य विन्यास, संबंधी अनेक अनियमितताएँ बनी रही । उसी समय आचार्य महावीर प्रसार द्विवेदी ने भाषा परिमार्जन का कार्य संपन्न किया ।

४. भाषा परिमार्जन का कार्य

हिन्दी साहिच्यकाश में बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का उदय एक महत्वपूर्ण घटना है । उन्होंने अपनी प्रतिभा के आलोक से तत्कालीन समाज एवं साहित्य को आलोकित किया । उन्होंने राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की अरबी फारसी मिश्रित तथा राजा लक्ष्मण सिंह की संस्कृतिनिष्ठ अतिवादी भाषा नीति को त्याग क मध्यम वर्ग को स्वीकार किया । उन्होंने संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ साथ साधारण बोलचाल के उर्दू, फारसी, अंग्रेजी के विदेशी शब्दो, तद्भव और देशी शब्दो का प्रयोग कर भाषा प्रयोग कीया है । यह भाषा भारतीय समाज के लोगो को अनुकूल हुई थी । भारतेन्दु ने कहावतो और मुहावरों का प्रयोग भी नाटक, निबंध में उच्छे से किया है ।

भारतेन्दुने गद्य लेखको का एक मंडल भी तैयार किया । इसमें बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण, श्री निवासदास, बद्रीनारायण चौधरी, आदि उन्होंने सामाजिक कुरितियों दूर करने के लिए जागृति अभ्यान भी चलाया । उन्होंने अपरिपक्व लेखकों की भाषा शैली की आलोचना की और नवयुवानो को साहित्यिक रचनाओं का निर्माण कार्य करने का आह्वान किया । उनकी प्रेरणा पाकर उच्च कोटि के साहित्यकार समाज को मिले भारतेन्दुदीने अपनी प्रतिभा के बल पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है । भारतेन्दु जी का समय सन 1868 ई से सन 1903 तक माना जाता है । अतः इस युग का नामकरण उन्ही के नाम से “भारतेन्दु युग” किया गया ।

५. समापन

निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि भारतेन्दु बहुमुखी प्रतिभा वाले थे । उन्होंने साहित्य का हरेक कोना सोंका और उसपे अपना ज्ञान व्यक्त किया । किन्तु उनका देंहात 35 साल की अल्पआयु में हुआ । इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि हिन्दी प्रचार एवं प्रसार में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है और अपने कार्यो से इन्होंने हिन्दी साहित्य को लोकप्रिय बनाया ।